Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

JOL

योएल1:1–20, जोएल2:1–27, योएल2:28–3:21

योएल 1:1–20

दक्षिणी राज्य के लोग बहुत दुखी थे। परमेश्वर ने उनके देश में टिड्डियों की एक महामारी भेजी थी।

यह उस टिड्डियों की महामारी के समान था जो परमेश्वर ने मिस्र में भेजी थी। वह दस विपत्तियों के समय की बात थी। योएल के समय में, टिड्डियों ने दक्षिणी राज्य की सभी फसलों को नष्ट कर दिया।

योएल ने इस घटना को प्रभु का दिन कहा। इसका अर्थ था कि परमेश्वर अपने लोगों (परमेश्वर के लोग) के खिलाफ न्याय लाये थे ।

योएल ने परमेश्वर के लोगों से आग्रह किया कि वे रोएं, भोजन न करें और परमेश्वर को पुकारें। शोक मनाना, उपवास करना और प्रार्थना करना यह दिखाने के तरीके थे कि लोग पाप से दूर हो गए। इन कार्यों ने दिखाया कि लोगों ने पापों का पश्चाताप किया और परमेश्वर की ओर लौट आए।

जोएल 2:1–27

योएल भविष्यद्वक्ता ने टिड्डियों की सेना के बारे में न्याय का संदेश साझा किया।

योएल ने संदेश को एक कविता के रूप में साझा किया। सेना के आगमन के समय को प्रभु का दिन कहा गया था।

योएल ने इस सेना की टिड्डियों का वर्णन करने के लिए अंतकालीन लेखन का उपयोग किया। यह वही टिड्डियों का प्रकोप हो सकता है जिसके बारे में अध्याय 1 में बात की गई है। या यह आने वाले युद्ध के बारे में बात करने का एक तरीका हो सकता है।

टिड्डियाँ शायद उन मनुष्यों के लिए संकेत थीं जो सैनिक थे। संदेश का उद्देश्य लोगों को यह प्रेरित करना था कि वे अपने हृदयों को नम्र होने दें।

इसका मतलब यह समझना था कि पाप कितना भयानक है। इसका अर्थ था पाप के बारे में बहुत दुखी होना था। इसका अर्थ था अब और पाप न करना चाहना बल्कि परमेश्वर के मार्गों का अनुसरण करना चाहना।

सीनै पर्वत की वाचा में परमेश्वर ने समझाया था कि वे चाहते हैं कि उनके लोग कैसे जीवन व्यतीत करें।

योएल ने यह संदेश सुनाया कि लोगों के पश्चाताप करने के बाद क्या होगा। दक्षिणी राज्य के पौधे, पशु और लोग फिर से वाचा की आशीषों का आनंद लें सकेंगे। परमेश्वर के लोग उनकी एकमात्र सच्चे परमेश्वर के रूप में आराधना और सेवा करेंगे।

योएल 2:28–3:21

योएल ने दक्षिणी राज्य के चारों ओर के राष्ट्रों के खिलाफ न्याय के संदेश साझा किए। इस न्याय के समय को प्रभु का दिन कहा गया था। योएल ने इस दिन का वर्णन करने के लिए अंतकालीन लेखन का उपयोग किया था। यह कुछ के लिए न्याय का समय था और दूसरों के लिए आशीष का समय था। परमेश्वर ने वादा किया कि वे उन राष्ट्रों का न्याय करेंगे जिन्होंने उनके लोगों के साथ बुरा व्यवहार किया था। इन राष्ट्रों के पापों पर परमेश्वर का क्रोध एक दाख रसकुण्ड की तरह था। राष्ट्र उसमें दाख की तरह कुचले जाएंगे। योएल ने इसी तरह उन्हें बुरे कार्य करने के लिए दंडित किये जाने का वर्णन किया।

यशायाह के संदेश अध्याय 1 में दिखाते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों के पाप के कारण न्याय लाए। अध्याय 2 और 3 के संदेश परमेश्वर के बारे में कुछ और दिखाते हैं। परमेश्वर सभी जातियों के समूहों के पाप के कारण न्याय लाते हैं। और परमेश्वर की आशीषें उन सभी जातियों के समूहों के लिए हैं जो उनकी आज्ञा का पालन करते हैं। परमेश्वर ने चुना कि वे सिय्योन में निवास करें। यरूशलेम का एक और नाम सिय्योन है। इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने वहां लोगों के बीच अपनी उपस्थिति को प्रकट किया। परमेश्वर की उपस्थिति उनके लोगों के लिए सुरक्षा, स्वास्थ्य, शांति और विश्राम लाती है।

ये आशीषें केवल इस्राएल के लोगों के लिए नहीं थीं। परमेश्वर ने वादा किया था कि मन्दिर से एक सोता बहेगा। यहेजकेल ने भी मन्दिर से बहने वाली नदी के बारे में बात की (यहेजकेल 47:1–12)। मन्दिर से बहने वाला जल आशीष का संकेत था। यह उस जीवित जल का भी संकेत था जो परमेश्वर को जानने

योएल *2:28–3:21*

से आता है। योएल ने दिखाया कि यह आशीष और जीवन उन सभी लोगों के लिए था जो परमेश्वर की सेवा करते हैं।

परमेश्वर उन पर अपनी आत्मा उण्डेलेगे। इसका अर्थ था कि पवित्र आत्मा उनके लोगों के भीतर होगा। यह नई वाचा का हिस्सा था। कई वर्षों बाद यीशु ने पिन्तेकुस्त के दौरान अपने अनुयायियों के पास पवित्र आत्मा भेजा। पतरस ने समझाया कि जब यह हुआ, तब योएल की भविष्यद्वाणी का एक हिस्सा पूरा हुआ (प्रेरि 2:14–21)।